Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 1844–1847

DEVOTION IN THE FOLK LITERATURE OF PANDIT JAGANNATH

पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में भक्ति-भावना

Navita [1], Dr. Sharmila

[1] Research Scholar, Hindi Department, Guru Jambheshwar University of Science and Technology, Hisar, India
[2] Assistant Professor, Hindi Department, Guru Jambheshwar University of Science and Technology, Hisar, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.2611

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Pandit Jagannath has been a famous folk poet of Haryana who is also known as "Chhota Lakhmichand". Pandit Jagannath holds a prominent place in folk literature and devotion is prominently reflected in his works. Bhakti literature is an important part of Indian folk culture in which there is an expression of love, dedication and spirituality towards God. Similar devotion is also seen in the works of Pandit Jagannath, where he expresses his devotion and faith towards God in simple and lively language. There is a deep spiritual approach in his works where the inclusion of folk language and folk cultures makes his devotional literature even more impressive. This type of literature mentions the glory of God, religious stories and purification of a person's soul. His works are written for the general public, due to which they work to spread religious and spiritual awareness. His works are not only focused on devotion; but various aspects of folk life have also been highlighted in them.

Hindi: पंडित जगन्नाथ हरियाणा के एक प्रसिद्ध लोक कवि हुए हैं जिन्हें श्छोटा लखमीचंदश् के नाम से भी जाना जाता है। पंण् जगन्नाथ लोक साहित्य में एक प्रमुख स्थान रखते हैं और उनकी रचनाओं में भक्ति.भावना प्रमुख रूप से प्रकट होती है। भक्ति.साहित्य भारतीय लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसमें भगवान के प्रति प्रेमए समर्पण और आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति होती है। पंण् जगन्नाथ की रचनाओं में भी इसी प्रकार की भक्ति.भावना देखने को मिलती हैए जहां वे भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा और आस्था को सरल और सजीव भाषा में व्यक्त करते हैं। उनकी रचनाओं में एक गहन आध्यात्मिक दृष्टिकोण है जहां लोक भाषा और लोक संस्कृतियों का समावेश उनके भक्ति साहित्य को और भी प्रभावशाली बना देता है। इस प्रकार के साहित्य में भगवान की महिमाए धार्मिक कथाएँ और व्यक्ति की आत्मा की शुद्धि का उल्लेख होता है। उनकी रचनाएँ सामान्य जनमानस के लिए लिखी गई है जिससे वे धार्मिक और आध्यात्मिक जागरूकता फैलाने का कार्य करती हैं। उनकी रचनाएँ न केवल भक्ति पर केंद्रित हैंय बल्कि उनमें लोक जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर किया गया है।

1. प्रस्तावना

लोक साहित्य का अर्थ है वह साहित्य जो मौखिक रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचता है। यह साहित्य मानवीय अनुभवों, परंपराओं और समाज के सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिबिंब होता है। इसके तहत लोकगीत, लोककथाएँ, कहानियाँ, लोक नाटक, लोकोक्तियाँ तथा लोक नृत्य आदि आते हैं। लोक साहित्य आमतौर पर किसी एक समुदाय या समाज के लोगों द्वारा सृजित होता है और उनके जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करता है। [1]

लोक साहित्य की एक प्रमुख विशेषता इसकी मौखिकता है। इसे पढ़ने या लिखने के बजाय गाकर, सुनाकर या नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसके माध्यम से समाज के रीति-रिवाज, मान्यताएँ और भावनाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती हैं। इस प्रकार का साहित्य विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में अधिक प्रचलित है, जहां शिक्षा और पुस्तकों की पहुँच सीमित होती है। [2]

लोक साहित्य में "लोकगीत" विशेष स्थान रखते हैं जिन्हें विभिन्न पर्वों, उत्सवों, और संस्कारों के दौरान गाया जाता है। उदाहरण के लिए, उत्तर भारत में विवाह के दौरान गाए जाने वाले "बिदाई गीत" सामाजिक बंधनों और भावनात्मक रिश्तों को अभिव्यक्त करते हैं। [3]

लोक साहित्य का महत्व इस बात में निहित है कि यह सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में सहायक होता है। यह समाज के मानवीय अनुभवों, उसके संघर्षों, और आशाओं को संजोए रखता है जिसे आधुनिक युग में भी महत्वपूर्ण माना जाता है। [4]

भक्ति-भावना का अर्थ है एक विशेष प्रकार की आध्यात्मिक अनुभूति जिसमें व्यक्ति ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा और समर्पण का भाव रखता है। यह भावना व्यक्ति को अपने इष्ट देवता या भगवान के प्रति आस्था में गहराई तक जोड़ती है। भारतीय संस्कृति में भक्ति की परंपरा अत्यंत प्राचीन है और इसकी व्याख्या कई संतों और भक्तों ने की है। [5]

भक्ति का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति और ईश्वर के बीच व्यक्तिगत और आध्यात्मिक संबंध को स्थापित करना होता है। भक्ति के माध्यम से व्यक्ति अपने अहंकार का त्याग करता है और पूर्ण समर्पण की भावना को अपनाता है। यह भावना किसी विशेष कर्मकांड या पूजा पद्धति तक सीमित नहीं होती, बल्कि इसमें प्रेम और आस्था की प्रमुखता होती है (सिंह, 2012)। उदाहरण के लिए, संत तुलसीदास ने अपनी काव्य रचनाओं में भगवान राम के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को अभिव्यक्त किया है जिसे उन्होंने 'रामचरितमानस' में बड़े भावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया। [6]

भक्ति आंदोलन के प्रवर्त्तक संतों जैसे मीराबाई, कबीर और गुरु नानक ने भक्ति को एक व्यापक सामाजिक और आध्यात्मिक परिवर्तन के साधन के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, भक्ति में जाति, धर्म, और वर्ग की सीमाओं का कोई स्थान नहीं है। मीराबाई ने अपने भजनों में भगवान कृष्ण के प्रति प्रेम को इस तरह व्यक्त किया कि वे सामाजिक मान्यताओं से ऊपर उठ गईं। [7]

भक्ति-भावना का प्रभाव भारतीय समाज और संस्कृति पर बहुत व्यापक रहा है। इसके माध्यम से सामाजिक समानता और धार्मिक सहिष्णुता का संदेश फैलाया गया, जो आज भी प्रेरणा स्रोत बना हुआ है। [8]

पंडित जगन्नाथ (1939-2018) हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति रहे हैं। उनका योगदान हरियाणा के साहित्य, संस्कृति और समाज के विकास में व्यापक रूप से माना जाता है। पंडित जगन्नाथ भी एक प्रसिद्ध हरियाणवी सांग रचयिता थे जिनकी रागनियों में हरियाणा के जीवन के विभिन्न पहलुओं का व्यापक वर्णन हुआ है। पंडित जगन्नाथ ने हरियाणा के साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी रचनाएं हरियाणवी भाषा और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को व्यापक रूप से व्यक्त करती हैं। उनका प्रमुख उद्देश्य हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखना और उन्हें समृद्ध करना था। उनके भजन और रागनियाँ इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे समाज के उत्थान के लिए अपने लेखन कार्यों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयास करते रहे। उनकी रचनाएं समाज सुधार और विकास के मुद्दों पर चिंतन करती हैं। पंडित जगन्नाथ ने शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। उन्होंने लोक कला, संस्कृति और परंपराओं को शिक्षा के माध्यम से प्रोत्साहित किया। उनका लोक-साहित्य हरियाणा के समाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहलुओं को विस्तार से व्यक्त करता है। उनकी रचनाएं हरियाणा की विविधता और विरासत को संजीवनी देती हैं। पंडित जगन्नाथ का योगदान हरियाणा की सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण रहा है। उनकी रचनाएं और साहित्यिक कार्य हरियाणा की सांस्कृतिक विविधता को समृद्धि और गरिमा से भर देते हैं। [9]

पं. जगन्नाथ के लोक साहित्य में भक्ति-भावना प्रमुख रूप से प्रकट होती है। उनके काव्य और लेखन में ईश्वर के प्रति गहरा समर्पण प्रेम और श्रद्धा दिखाई देती है। भक्ति साहित्य भारतीय लोक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसमें धार्मिक आस्था, आत्मिक शुद्धता और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव समाहित होता है। पं. जगन्नाथ की रचनाओं में यह भक्ति-भावना स्पष्ट रूप से झलकती है, जहां वे सरल भाषा और लोकजीवन की शैली में ईश्वर की महिमा का गुणगान करते हैं। उनकी रचनाएँ आम जनमानस के हृदय को छूने वाली होती हैं क्योंकि वे उनकी आस्थाओं और विश्वासों के अनुरूप होती हैं। [10]

2. पंडित जगन्नाथ के लोक साहित्य में भक्ति-भावना के प्रमुख पहलू

पं. जगन्नाथ के भक्ति साहित्य में भगवान के प्रति असीम प्रेम और समर्पण की भावना व्यक्त है। उनके काव्य में भगवान को व्यक्ति का मार्गदर्शक और उद्धारक माना गया है और व्यक्ति के जीवन के सभी सुख-दुख को ईश्वर के चरणों में समर्पित करने की बात कही गई है। उनकी रचनाओं में राम, कृष्ण, शिव आदि देवताओं की महिमा और उनकी लीलाओं का वर्णन किया गया है जो भक्ति मार्ग को प्रकट करता है। उनके अनुसार "***राम जी का नाम पहले सब कुछ बाद में***" [11]अर्थात् किसी भी काम को शुरू करने से पहले भगवान श्री राम का नाम लेना बहुत जरूरी है वे अपनी दिनचर्या भी प्रभु सिमरन से शुरू करते थे और उन्होंने यही संदेश दिया कि किसी भी काम की शुरुआत से पहले भगवान का नाम लेना बहुत जरूरी है इससे सभी काम निर्विघ्न पूरे होते हैं।

"तीन किस्म के यज्ञ हैं दान-तप, श्रद्धा और आहार। सबको फल मिलता है जग में कर्मों के अनुसार" [12] उपरोक्त पंक्तियाँ पंडित जगन्नाथ द्वारा रचित सांग गीता उपदेश से ली गई है जिसमें उन्होंने जिसमें उन्होंने दान-तप, श्रद्धा और आहार को यज्ञ की तरह बताया है। मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार फल मिलता है।

"ना कोये जाणता हर के घर की, किसनै थाह पावै सागर की, पार गये जिन्हें महिमा हर की, गा ली खुश होकै" [13] उपरोक्त पंक्तियाँ पंडित जगन्नाथ द्वारा रचित सांग सीता वनवास से ली गई है। इसमें पंडित जगन्नाथ जी ने बताया है कि जिस प्रकार सागर के छोर को कोई नहीं जान सकता। उसी प्रकार भगवान के घर के बारे में किसी को नहीं पता। जिन्होंने खुश होकर भगवान की महिमा का गान किया, वे इस संसार रूपी भवसागर से पार उतर गए।

"जगन्नाथ प्रेम के जल में, अपणा चित भेणा सै। सतसंग रूपी साबुन से यो, निर्मल कर देणा सै"[14] पंडित जगन्नाथ के अनुसार ईश्वर भक्ति एक साबुन की तरह काम करती है जो मन के समस्त पाप को धो देती है। उन्होंने बताया कि काम, क्रोध, मोह आदि के मैल से जो हमारा मन मालिन हो जाता है उसको ईश्वर की प्रेम जल में भिगो के और सत्संग रूपी साबुन से धोकर के निर्मल किया जा सकता है।

"जगन्नाथ याहे बात खरी, होकै घर-कुणबे तैं बरी'। हरि गुन गाऊँ, बस दिन-राती" [15] उपरोक्त पंक्तियां पंडित जगन्नाथ के सांग शिव–पार्वती–विवाह से उद्धृत है। इसमें पंडित जगन्नाथ जी स्वयं को संबोधित करते हुए कहते हैं कि सबसे उचित यही बात है कि जिस मनुष्य ने अपने घर गृहस्थी के काम पूरे कर लिए हैं उनको हरि का गुणगान करना चाहिए उनको बस दिन-रात, सुबह–शाम हरि के गुणगान में ही समय व्यतीत करना चाहिए।

"राखी हरदम जिसनै लाज। भूलिये मतना भारद्वाज। आज तक जिसनै तँ पाला, वो सदा शिव है, सदा शिव है" [16] उपरोक्त पंक्तियां पंडित जगन्नाथ द्वारा रचित सांग शिव–पार्वती–विवाह से ली गई है। इसमें पंडित जगन्नाथ जी स्वयं को संबोधित करते हुए कहते हैं कि भारद्वाज तू उन भगवान को कभी मत भूलना जिसने तुम्हारी लाज रखी है, आज तक जिसने तुम्हें पाला है, वह भगवान शिव ही है। भगवान शिव ने हमेशा तुम्हारा साथ दिया है। उन्होंने भगवान शिव को ही संपूर्ण जगत का पालनहार बताया है।

"जगन्नाथ जो दास हरि के, उनके कारज खुद सरते। छोटी-मोटी आपत्ति में, वै मामूली भी ना डरते" [17] उपरोक्त पंक्तियां पंडित जगन्नाथ द्वारा रचित सांग गोकर्ण से ली गई हैं। इसमें जगन्नाथ जी कहते हैं कि जो भगवान जी का भजन करते हैं उनके काम स्वयं भगवान जी करते हैं। जिन पर हरि कृपा होती है वह छोटी-मोटी आपत्तियों से बिल्कुल नहीं डरते हैं क्योंकि उन विपत्तियों में उनकी रक्षा स्वयं श्री हरि करते हैं।

"राम नाम बिन इस दुनियाँ मैं, और सहारा ना सै। एक राम नाम है सत्य जगत में, और साराए पाखंड सै" [18] उपरोक्त पंक्तियाँ पंडित जगन्नाथ द्वारा रचित सांग गोकर्ण से उदित है इसमें पंडित जगन्नाथ जी ने बताया है कि राम नाम के बिना इस दुनिया में दूसरा कोई भी सहारा नहीं है। इस संसार में राम नाम के अलावा सब जगह पाखंड फैला हुआ है। इस जगत में राम का नाम ही सत्य है।

"मन को निश्चल करकै राखै, जो एक जगह पै ध्यान। करै जलपान कथा का, उसका हो जाता कल्यान । वेदब्यास जी नै रच राखा, भागवत महापुरान । भवसागर से पार होंण नै, यो एक नाव समान। जगन्नाथ भगवान सुणै, जो सबके हितकारी" [19] उपरोक्त पंक्तियां पंडित जगन्नाथ द्वारा रचित रचनावली में सांग गोकर्ण से ली गई है। इसमें पंडित जगन्नाथ जी ने बताया है कि जो मनुष्य एक जगह पर अपना ध्यान लगाकर मन को निश्चय करके कथा सुनते हैं, उनका कल्याण हो जाता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया है कि वेदव्यास जी ने भागवत महापुराण की रचना की। यह संसार रूपी भवसागर से पार उतरने के लिए एक नौका के समान है। जो मनुष्य भगवान जी का भजन करता है, भगवान उनकी पुकार अवश्य सुनते हैं।

"जगन्नाथ कुछ सोच अगत की। मतना देखै चाल जगत की। भगत की सुणिये राम पुकार, करदे भवसागर तैं पार" [20] उपरोक्त पंक्तियाँ पंडित जगन्नाथ के सांग चंद्रकांता से ली गई है। इसमें पंडित जगन्नाथ जी ने स्वयं को संबोधित करते हुए कहा है कि जगन्नाथ तुझे कुछ अपने आगे के बारे में भी सोच विचार कर लेना चाहिए। संसार क्या कर रहा है, इसकी फिक्र छोड़कर तुझे हरि नाम का सुमिरन करना चाहिए। वे ही तुझे भवसागर से पार कर सकते हैं।

"मिलै नहीं चैन मूल, चाहे दिन-रात फिरले । करले नै सच्चे दिल से, राम का भजन" [21] उपरोक्त पंक्तियाँ पंडित जगन्नाथ द्वारा रचित सांग चंद्रकांता से ली गई है इसमें जगन्नाथ जी ने भगवान की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है कि चाहे कुछ भी कर ले दिन-रात हमें शांति नहीं मिलने वाली जब तक हम सच्चे दिल से भगवान का भजन नहीं कर लेते।

"जगन्नाथ तँ छोड़ गुमर', रात और दिन भगवान सुमर" [22] उपरोक्त पंक्तियाँ पंडित जगन्नाथ द्वारा रचित सांग शिव–पार्वती–विवाह और चंद्रकांता से ली गई है। इन पंक्तियों में जगन्नाथ जी ने बताया है कि मनुष्य को अपने गुमान को, अपने अहंकार को त्याग कर सच्चे दिल से हरि का भजन करना चाहिए।

"जगन्नाथ गुरु का पायक ।। एक मामूली सा हरि गुणगायक" [23] उपरोक्त पंक्तियों में पंडित जगन्नाथ ने स्वयं को गुरु का एक सेवक या दूत ही बताया है। उपरोक्त पंक्तियों में उन्होंने स्वयं को अहंकार से दूर रखते हुए, महान गायक होते हुए भी स्वयं को हरि का गुणगान करने वाला मात्र एक दूत कहा है।

"घड़ी-आध घड़ी, जगन्नाथ जो हर का ध्यान करै। प्रकृति के सभी गुणों का, वो आदर मान करै" [24] पंडित जगन्नाथ ने उपरोक्त पंक्तियों में हरि गुणगान के महत्व के बारे में बताया है। उन्होंने कहा है कि अगर ज्यादा समय नहीं तो कुछ समय ही सही पर हरि का ध्यान करना जरूरी है इससे हमारे मन को असीम शांति का अनुभव होता है इसके साथ-साथ उन्होंने प्रकृति के सभी गुणों का आदर–सम्मान करने का भी संदेश दिया है। प्रकृति के गुणों में आते हैं दयालुता, उदारता, प्रेम, करुणा और अहिंसा; इन सब का अनुसरण करते हुए मनुष्य को मानव-धर्म निभाना चाहिए। ।

3. निष्कर्ष

लोक साहित्य की सरल और सहज भाषा के माध्यम से पं. जगन्नाथ ने भक्ति को सामान्य जन तक पहुँचाया। उनकी रचनाएँ सीधे दिल से निकलती हैं और श्रोताओं के दिल तक पहुँचती हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति को केवल धार्मिक क्रियाओं तक सीमित नहीं रखा; बल्कि इसे जीवन जीने का एक तरीका बताया। भक्ति में प्रेम, करुणा, दया और अहिंसा के गुणों का महत्व बताया गया है। उनके अनुसार मनुष्य भगवान की भक्ति

करके ही संसार रूपी भवसागर से पार उतर सकता है और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। पं. जगन्नाथ का मानना था कि सच्ची भक्ति वह है जिसमें व्यक्ति अपने अहंकार का त्याग कर पूरी तरह से भगवान के चरणों में समर्पित हो जाए।

उनकी रचनाओं में लोक जीवन का चित्रण भी देखने को मिलता है जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों की आस्थाओं और विश्वासों को भक्ति के माध्यम से प्रकट किया गया है। उनके भक्ति साहित्य में एक आध्यात्मिक संदेश है जो व्यक्ति को आत्म-जागृति और ईश्वर के प्रति समर्पण की प्रेरणा देता है। इस प्रकार पं. जगन्नाथ के लोक साहित्य में भक्ति-भावना न केवल ईश्वर की महिमा और आराधना का माध्यम है; बल्कि यह समाज के लोगों को एकता, प्रेम और सह-अस्तित्व का संदेश भी देता है। उनकी रचनाओं ने भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया और इसे एक साधना का रूप दिया जिससे व्यक्ति अपने जीवन को उच्च आदर्शों और नैतिक मूल्यों के साथ जी सके।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

कुमार, पी. (2012), भारतीय लोक साहित्य: परंपरा और परिवेश, नई दिल्ली: साहित्य भवन
मिश्रा, ए. (2015), भारतीय संस्कृति में लोक साहित्य की भूमिका, वाराणसी: काशी प्रकाशन
सिंह, र. (2014), भारतीय लोकगीत और उनकी सांस्कृतिक परंपराएँ, मुंबई: राष्ट्रभाषा प्रकाशन
शुक्ला, ए. (2010), लोक साहित्य का इतिहास, इलाहाबाद: हिंदी ग्रंथ अकादमी
गुप्ता, आर. (2014), मीराबाई और कृष्ण भक्ति की परंपरा, वाराणसी: काशी प्रकाशन
मिश्रा, ए. (2015), भक्ति आंदोलन का समाज पर प्रभाव, नई दिल्ली: साहित्य भवन
सिंह, पी. (2012), भारतीय भक्ति साहित्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, मुंबई: राष्ट्रभाषा प्रकाशन
शर्मा, डी. (2010), भक्ति और भारतीय संस्कृति, जयपुर: भारतीय प्रकाशन
मलिक, मा. (2011), पंडित जगन्नाथ रचनावली सर्जन के विभिन्न अंग
चहल, रा. (2019), पं० जगन्नाथ समाज समाचाना ग्रंथावली: सुकीर्ति प्रकाशन
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 357
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 193
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 223
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 228
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 270
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 277
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 288
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 295
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 302
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 316
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 332
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 267
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 353
मलिक, माया और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 354